स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड - डॉ० मुन्ना साह
(षष्ठ पत्र - प्रयोजनमूलक हिन्दी) हिन्दी विभाग
हिन्दी की शब्द-सम्पदा - III जे० के० कॉलेज

पारिभाषिक शब्द - पारिभाषिक शब्द वे शब्द हैं जिनका अर्थ और संदर्भ पूर्णतः परिभाषित होता है। ये शब्द किसी खास संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं किंतु प्रयुक्ति के संदर्भ में इनका अर्थ एकदम निश्चित व वस्तुनिष्ठ होता है। प्रत्येक विषय या क्षेत्र के अपने पारिभाषिक शब्द होते हैं। इनके उदाहरण -

दर्शनशास्त्र - रहस्यवाद, तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा इत्यादि।

अर्थशास्त्र - संपत्ति, मांग, आपूर्ति इत्यादि।

(घ) परिवर्तनशीलता की दृष्टि से - इस दृष्टि से भाषा के सभी शब्दों को दो भागों में बांट दिया जाता है - विकारी शब्द तथा अविकारी शब्द। विकारी शब्द वे हैं जो काल, लिंग, वचन आदि के साथ परिवर्तित हो जाते हैं तथा अविकारी शब्द वे हैं जो हर स्थिति में समान बने रहते हैं।

(i) विकारी - जो लिंग, वचन या काल आदि के परिवर्तन से बदल जाते हैं। हिंदी में चार प्रकार के विकारी पद मिलते हैं। उनके परिवर्तनशील रूप का उदाहरण :-

(अ) संज्ञा : लड़का, लड़के, लड़कियाँ इत्यादि।

(आ) विशेषण : काला, काले, काली इत्यादि।

(इ) सर्वनाम : वह, वे, वही इत्यादि।

(ई) क्रिया : जाता है, जाते हैं, जाती है इत्यादि।

(ii) अविकारी - जो किसी भी स्थिति में परिवर्तित नहीं होते हैं। प्रत्येक लिंग, वचन तथा काल में इनकी एक सी संरचना बनी रहती है। अविकारी पद निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किए गए हैं -

(अ) क्रियाविशेषण : ऐसे विशेषण जो संज्ञा की नहीं, क्रिया की विशेषता बताते हैं, जैसे - धीरे चलना, में 'धीरे' शब्द 'चलना' क्रिया का विशेषण है।

(आ) योजक या समुच्चयबोधक पद : वे पद जो दो वाक्यों या उपवाक्यों या पदों को जोड़ते हैं जैसे - और, तथा, या, किंतु इत्यादि।

इसी प्रकार सम्बन्धबोधक पद - के लिए, के बिना इत्यादि। विस्मयादिबोधक पद। जैसे - अरे, उफ इत्यादि।